हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर तृतीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या :- 10

वैनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)

दिनांक 23/07/2020

कामायनी की मूल संवेदना

काव्य रूप की दृष्टि से कामायनी चिन्तनप्रधान है, जिसमें कवि ने मानव को एक महान् संदेश दिया है। 'तप नहीं केवल जीवन सत्य है।' कवि ने मानव जीवन की महत्ता प्रेम घोषित की है। यह जगत् कल्याण भूमि है, यही श्रद्धा की मूल स्थापना है। इस कल्याण भूमि में प्रेम ही एकमात्र ओज और प्रेम है। इसी प्रेम का संदेश देने के लिए कामायनी का अवतार हुआ है। प्रेम मानव और केवल मानव की विभूति है। मानवेतर प्राणी चाहे वे चिरविलासी देव हो चाहे देव और प्राण की पूजा में निरन्तर असुर, दैत्य और दानव हो चाहे पशु हो, प्रेम की कला और महिमा वो नहीं जानते, प्रेम की प्रतिष्ठा केवल मानव ने की है।

परन्तु इस प्रेम में सामरस्य की आवश्यकता है। समरसता के अभाव में यह प्रेम उच्छृंखल प्रणयवासना का रूप लेता है। मनु के जीवन में इस सामरस्य के अभाव के कारण ही मानव प्रजा को काम का अभिशाप सहना पड़ रहा है। भेद-भाव, ऊँच-नीच की प्रवृत्ति आडंबर और दंभ की दुर्भावना सब इसी सामरस्य के अभाव से उत्पन्न होती है जिससे जीवन दुःखमय और अभिशापग्रस्त हो जाता है। कामायनी में इसी कारण समरसता का आग्रह है।

यह समरसता द्वंद्व भावना में सामंजस्य उपस्थित करती है। संसार में द्वंद्वों का उद्गम शाश्वत तत्व है। फूल के साथ काँटे, भाव के साथ अभाव, सुख के साथ दुख

और रात्रि के साथ दिन नित्य लगा ही रहता है। मानव इनमें अपनी रुचि के साथ एक को चुन लेता है दूसरे को छोड़ देता है और यही उसके विषाद का कारण है। मानव के लिए दोनों को स्वीकार करना आवश्यक है। किसी एक को छोड़ देने से काम नहीं चलता। यहीं द्वंद्वों की समन्वय स्थिति ही सामरस्य है। प्रसाद ने हृदय और मस्तिष्क, शक्ति और ज्ञान, तप, संयम और प्रणय, प्रेम, इच्छा, ज्ञान और क्रिया सबके समन्वय पर बल दिया है।

प्रतीकात्मकता - कामायनी एक प्रतीकात्मक काव्य है जिसमें मनु, श्रद्धा, इड़ा, किलात-आकुलि, श्वेत वृषभ आदि क्रमशः मन, बुद्धि, मानव, आसुरी भाव, धर्म के प्रतीक है। डॉ० नगेन्द्र ने कहा है- कामायनी मानव चेतना के विकास का महाकाव्य है।

यदि श्रद्धा और मनु अर्थात् मनन के सहयोग से मानवता का विकास रूपक है यह मनुष्यता का मनोवैज्ञानिक इतिहास बनने में समर्थ हो सकता है। आज हम सत्य का अर्थ घटना कर लेते हैं तब भी, उसके तिथिक्रम मात्र से संतुष्ट होकर मनोवैज्ञानिक अन्वेषण के द्वारा इतिहास के घटना के भीतर कुछ देखना चाहते हैं कामायनी की श्रृंखला मिलाने के लिए कहीं-कहीं थोड़ी बहुत कल्पना को भी काममें ले लाने का अधिकार मैं नहीं छोड़ सका हूँ।

प्रस्तुतकर्त्ता

दिनांक
23/09/2020

बेनाम कुमार (सहायक प्राध्यापक
अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय
हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० – 8292271041